उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत | विशय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGST**
कोर्स शीर्शक : अभिज्ञान शाकुन्तलम्
कोर्स कोडः यू0जी0एस0टी0 01 | **Course Code : UGST-01**
Course Title : भर्तृहरिकृत् नीतिशतकम् (30 श्लोक पर्यन्त)

अधिकतम अंक : 30
Maximum Marks: 30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 ‘ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A

खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18
MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्न श्लोकों में से किसी दो श्लोक का हिन्दी मे अनुवाद कीजिए – 6

i. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डननाकृतीनाम्।।

ii. ‘ामप्रधानेषु तपोधनेषु
गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्षानुकूला इव सूर्यकान्ता
स्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति।।

iii. अयं स ते तिष्ठति संगमोत्सुको
विशङ्.कसे भीरू यतोऽवधीरणाम्।
लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं
श्रिया दुशपः कथमीप्सितो भवेत्।

अथवा

iv. यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना –
माविष्कृतोऽरूणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।

v. इदं किलाव्याजमनोहरं वपु
स्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया
‘ामीलतां छेत्तुमृषिर्यवस्यति।

vi. ग्रीवाभङ.ाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः
पष्चार्धेन प्रविष्टः ‘ारपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दभैरर्धावलीढः श्रमविवृतमुखभ्रंषिभिः कीर्णवर्त्मा
पष्योदगप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।

अथवा

vii. अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररूहै
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।

viii. पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु य
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति 'ाकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।

vx. अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुल चात्मन
स्त्वऽयस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृष्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धूभिः।।

प्रश्न–2 अधोलिखित में से दो श्लोकां की संस्कृत में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए – 6

i. क) कामं प्रिया न सुलभा मनस्तु तद्भावदर्षनाष्वासि।
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।।

ख) परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठ कलस्य मे।
समुद्ररसना चोवी सखी च युवयोरियम्।।

अथवा

ii. क) गच्छति पुरः शरीरं धावति पष्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य।।

अथवा

ख) मुक्तेषु रष्मिषु निरायतपूर्वकाया
निष्कम्पचामरषिखा निभृतोर्ध्वकर्णा ः।
आत्मोद्धतैरपि रजोभिरलड.धनीया
धावन्त्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः।।

अथवा

iii. क) अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिर्णा बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमड.गेषु सन्नद्धम।।

ख) असंषयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा
यदार्यमस्यामभिलाषि में मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु
प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।।

प्रश्न–3 निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी दो सूक्ति की व्याख्या कीजिए – 6

i. सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।

ii. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र

अथवा

i. अकृताथऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।

ii. न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।

अथवा

i. अर्थो हि कन्या परकीय एव

ii. ग्लपयति यथा 'ाषाड.क तथा हि कुमुदवतीं दिवसः।

Section – B

खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 भर्तृहरि के जीवनवृत्त एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नीतिषतक का प्रतिपाद्य विषय क्या है?

अथवा

भर्तृहरि की काव्यकला पर प्रकाष डालें।

प्रश्न–5 अधोलिखित मे से किसी दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें –

i) सूत्रधार ii) विदूषक iii) अपवारित iv) विषकम्भक

अथवा

ii) क) अपवारित ख) नायिका ग) स्वगत घ) प्रवेषक

अथवा

iii) क) नान्दी ख) नेपथ्य ग) जनान्तिक घ) अंक

प्रश्न–6 नोतिशतक के किसी एक श्लोक को लिखिए।

अथवा

किस प्रकार के विद्वानों का अनादर नहीं करना चाहिए।

अथवा

विद्या विहीन व्यक्ति किसके समान है?

प्रश्न–7 निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए – 2

i) प्रारभ्यते न खलु विध्नभयेन नीचैः।
प्रारभ्य विध्नविहता विरमन्ति मध्याः
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

अथवा

ii) विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।।
विद्या बन्धुजनो विदेषगमने विद्या परादेवतं
विद्या राजसु पूजिता नहि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

अथवा

iii) जाडयं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नति दिषति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

प्रश्न–8 i) भर्तृहरि ने विद्या के विषय में क्या कहा है ? 2

अथवा

ii) भर्तृहरि ने सत्संगति के विषय में क्या कहा है?

अथवा

iii) भर्तृहरि के अनुसार वाणी का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न–9 अभिज्ञानशाकुन्तल का कोई एक श्लोक जो इस प्रष्न पत्र में न आया हो लिख कर उसमें प्रयुक्त अलंकार तथा छन्द बताइए।

अथवा 2

अभिज्ञानषाकुन्तल के आधार पर दुष्यन्त का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

अभिज्ञानषाकुन्तल के आधार पर 'ाकुन्तला का चरित्र –चित्रण कीजिए।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2017-2018

अधिन्यास (Assignment)

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत
विशय कोड : यू.जी.एस.
टी

Subject : Sanskrit
Subject Code : UGST

कोर्स शीर्शक : उत्तररामचरितम् (तृतीय अंकपर्यन्त)
कोर्स कोड : यू0जी0एस0टी0
02

छन्दोऽलंकार मंजूषा

Course Title :
Course Code : UGST-02

अधिकतम अंक : 30
Maximum Marks: 30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।

Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए – 6

i. क) एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु
वैखानसाश्रितरुणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमाः 'ामिनो भजन्ते,
नीवारमुष्टिपच्ना गृहिणो गृहाणि ।।

ख) यथेच्छभोग्यं वो वनमिदमयं में सुदिवसः
सतां सद्भिः सड.गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
तरुच्छाया तोयं यदपि तपनो योग्यमषनं
फलं वा मूल वा तदपि न पराधीनमिह वः।।

अथवा

ii. क) स्निग्धश्यामाः क्वचिदपरतो भीषणभोगरूक्षाः
स्थाने स्थाने मुखरककुभो झाड.कृतैर्निर्झराणाम्।
एते तीर्थाश्रमगिरिसरिद्गर्तकान्तारमिश्राः
सन्दृश्यन्ते परिचितभुवो दण्डकारण्यभागाः।।

ख) किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद्विप्रलूनं
हृदयकसुमषोषी दारूणो दीर्घशोकः।
ग्लपयति परिपाण्डु क्षाममस्याः शरीरं
शरदिज इव धर्मः केतकीगर्भपत्रम्।।

अथवा

iii. क) अलसलुलितमुग्धायध्वसंजातखेदा
दषिथिलपरिरम्भैर्दत्तसंवाहनानि।
परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यड.गकानि।

त्वमुरसि मम कृत्वा यत्र निद्रामवाप्त।।

ख) प्रियप्राया वृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः
प्रकृत्या कल्याणी मतिरनवगीतः पष्चियः।
पुरो वा पष्चाद्वा तदिदमविपर्यासितरसं
रहस्यं साधूनामनुपधि विषुद्धं विजयते ।।

प्रश्न–2 निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए – 6

i. विष्वंभरा भगवती भवतीमसूत
राजा प्रजापति समो जनकः पिता ते।
तेषां वधूस्त्वमसि नन्दिनि पार्थिवानां,
येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च।।

अथवा

ii. लौकिकानां हि साधूनामर्थ वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।

अथवा

iii. ब्रह्मादयो ब्रह्महिताय तप्त्वा
परःसहस्त्राः 'ारदस्तपांसि।
एतान्यपष्यन्गुरवः पुराणाः
स्वान्येव तजांसि तपोमयानि।

प्रष्न–3 i) महाकवि भवभूति के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाष डालिए। 2

अथवा

ii) 'एका रसः करुण एव' इसकी समीक्षा कीजिए।

अथवा

iii) कथावस्तु की दृष्टि से उत्तररामचरित एक सफल नाट्य कृति है, समीक्षा कीजिए।

Section – B

खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12 MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 निम्नलिखित सूक्तियों की हिन्दी में व्याख्या कीजिए – 6

i) क) यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।
ख) पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करूणो रसः।

अथवा

ii) क) लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ख) लोकात्तराणां चेतासि को नु विज्ञातुमर्हति।

अथवा

iii) क) तीर्थोदकं च वह्निष्च नान्यतः 'ुद्धिमर्हतः
ख) न किंचिंदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपोहति।

प्रश्न–5 अधोलिखित में से किसी दो अलंकारों का उदाहरण सहित लक्षण लिखिए – 2

i. 'लेष, अनुप्रास, अतिषयोक्ति,

अथवा

ii. उपमा, उत्प्रेक्षा, विभावना,

अथवा

iii. विशेषोक्ति, दीपक व्यतिरेक

प्रश्न–6 अद्योलिखित में से किसी दो छन्द का लक्षण स्पष्ट कीजिए।।

i) अनुष्टुप, वशस्थ, इन्द्रवज्रा, स्नग्घरा, विखरणी।

अथवा

ii) आर्या, उपेन्द्रवज्रा, 'ार्दूलविक्रीडीत,

अथवा

iii) षिखरिणी, मालिनी, स्नच्धरा

प्रश्न–7 i) नायक के भेद स्पष्ट करते हुए, उत्तररामचरित नाटक के नायक की कोटि स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ii) उत्तररामचरित नाटक के तृतीय अंक का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

अथवा

iii) नाट्यषास्त्रीय दृष्टि से उत्तररामचरित नाटक की समीक्षा कीजिए।

प्रष्न–8 निम्नलिखित 'लोक का संन्दर्भ सहित हिन्दी में अर्थ बताइए।

i) सम्बन्धिनो वषिष्ठादीनेष तातस्तवार्चति।
गौतमष्च 'ातानन्दो जनकानां पुरोहितः ।।

अथवा

ii) सतांकेनापि कार्येण लोकस्याराधनव्रतम।
तत्प्रतीतं हि तातेन मांच प्राणांश्च मुञ्चता।।

अथवा

iii) वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।।

प्रष्न–9 i) भवभूति की रचनाओं में भावपक्ष की प्रधानता है– संक्षिप्त प्रकाष डालिए।

अथवा

ii) उत्तरेरामचरिते भवभूतिर्विषिष्यते – संक्षेप में प्रकाष डालिए।

अथवा

iii) उत्तररामचरित के आधार पर राम अथवा सीता का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2018-2019

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विषय – संस्कृत
Subject : Sanskrit
कोर्स शीर्षक : बाणभट्टकृत कादम्बरी कथामुखम्
03
Course Title : (अगस्त्याश्रमवर्णन पर्यन्त)
सिद्धान्त कौमुदी (कारक प्रकरण)
लघु सिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा, संधि, स्त्री प्रत्यय)
संस्कृत निबन्ध

विषय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject Code : UGST
कोर्स कोड : यू0जी0एस0टी0
Course Code : UGST-03

अधिकतम अंक : 30
Maximum Marks:

30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर **800** से **1000** शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A

खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्नलिखित गद्यांश का अनुवाद कीजिए- 6

i. आसीदशेषनरपतिशिरः समभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः, चतुरुदधिमाला
मेखलाया भुवो भर्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तिलक्षमणोपेतः, चक्रधर
इव करकमलोपलक्ष्यमाणशङ्.खचक्रलाच्छनः, हर इव जितमन्मथः गुह्य इवाप्रतिहतशक्तिः,
कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः, जलधिरिव लक्ष्मीप्रसूतिः गंगाप्रवाह इव
भगीरथपथप्रवृत्तदानाद्रीकृतकरः, कर्ता महाश्चर्याणाम्, अर्हता क्रतूनाम् आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्
उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनम् गुणानाम् आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदयशैलो मित्रमण्डस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य
प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्, प्रत्यादेशो धनुष्मताम्,
धौरेयः साहसिकानाम् अग्रणीर्विदग्धानाम् वैनतेय इव विनतानन्दजननः वैन्य इव
चापकोटिसमुत्सारितारातिकुलाचलो राजा शूद्रको नाम।

प्रश्न–2 बाण के साहित्यिक वैभव का वर्णन कीजिए। 6

प्रश्न–3 चाण्डाल कन्या का चरित्र–चित्रण कीजिए।

Section – B

खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 अधोलिखित संज्ञाओं का विधान करने वाले सूत्र का उल्लेख कीजिए। 2

i. क) संहिता

ख) अनुनासिक

प्रश्न–5 अधोलिखित तीन सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 2

क) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

ख) अकथितं च

ग) येनांगविकारः

प्रश्न–6 निम्नलिखित रेखांकित पदों में से दो का सूत्रोल्लेखपूर्वक विभक्ति का निर्देश कीजिए : 2

क) <u>तण्डुलान्</u> ओदनं पचति।

ख) <u>क्रोशं</u> कुटिला नदी।

प्रश्न–7 निम्नलिखित में से किसी दो सूत्र की व्याख्या कीजिए – 2

i) हलन्त्यम् ii) आद्‌गुणः, iii) लोपःशाकल्यस्य

प्रश्न–8 निम्नलिखित का सूत्रोल्लेखपूर्वक सन्धि बताइये – 2

i) सुद्ध्युपास्यः ii) वागी"ाः iii) हरि""ाते

प्रश्न–9 निम्नलिखित शीर्षक में से किसी एक पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए – 2

i) संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

ii) विद्ययाऽमृतमश्नुते

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत
Subject : Sanskrit
कोर्स शीर्शक :वेद चयनम् , कठोपनिशद् ,अनुवाद
04
Course Title :

विशय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject Code : UGST
कोर्स कोड : यू0जी0एस0टी0–
Course Code : UGST-04

अधिकतम अंक : 30
Maximum Marks: 30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A

खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्नलिखित में से किन्हीं दो मंत्रों का अनुवाद कीजिए।

i. क) सहस्रषीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। 6
स भूमिं विष्वतो वृत्वात्यतिष्ठदृषाड.गुलम।।
ख) स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विष्ववेदा :
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

अथवा

ii. क) प्रतद्विषणुंः स्तवते वीयणे मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरूषु त्रि'ाु विक्रमंणेधिक्षियन्ति भुवनानि विष्वा।
ख) आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विष्वतोऽदब्धासो अपरीतास उदिभदः।
देवा नो यथा सदभिदवृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।

अथवा

iii. क) यः 'ाम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंष्यां 'ारद्यन्वन्दित्।
ओजायमानं यो अहि जद्यान दानुं 'ायानं स जनास इन्द्र : ।।

प्रश्न–2 निम्नलिखित में से किन्हीं एक मत्र की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। 6

i. शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युगोतमो माभि मृत्यो
त्वप्रत्सृष्टं माभिवेदत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथम वरं वृणे।

अथवा

ii. स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनारित
न तत्र त्वं जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाऽषनाया पिपासे
'ाोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

अथवा

iii. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो
लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।
जीविष्यामो यावदीषिष्यसि त्वं
वरस्तु में वरणीयः स एव।।

प्रश्न–3 i. विष्णु सूक्त का सारांश अपने शब्दों में लिखें। 6

अथवा

ii. कठापनिषद् के आधार पर रथरूपक कर वर्णन कीजिए।

अथवा

iii. विष्वेदेवा सूक्त का सारांष अपने 'ब्दों में लिखें।

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12 MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 किन्हीं चार पदों पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखें – 2

i. शम्बरं, रजन्त्म्, तर्पणीयः, उरुगाय,

अथवा

ii. कविक्रतुः, इमसि, निवर्तमान, जीवसे

अथवा

iii. साम्पराये सुधस्यं अस्रिधम्, स्वस्तये

प्रश्न–5 i. वेदांग किसे कहते हैं? वेदांगो पर संक्षिप्त प्रकाष डालें। 2

अथवा

ii. वेद के विभागों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

iii. संहिता ग्रन्थो पर प्रकाष डालिए।

प्रश्न–6 i. कठोपनिषद् के महत्त्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। 2

अथवा

ii. कठोपनिषद् का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

iii. कठोननिषद के आधार पर आत्मा का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न–7 प्रतिशाख्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 2

अथवा

ii. ब्राह्मण ग्रन्थों का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

iii. निरुक्त को वेदपुरूष का कौन सा अंग कहा गया है।

प्रश्न–8 किन्हीं चार वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। 4

i. क) प्रयाग के चारों ओर वन हैं।
ख) राम पिता के साथ गाँव जाता है।
ग) हमलोग रोज साथ में विद्यालय जाते है और गेंद खेलते हैं।
घ) आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

अथवा

ii. क) ब्राह्मण को प्रतिदिन दान देना चाहिए।
ख) हिमालय भारतवर्ष के उत्तर की ओर स्थित है।
ग) सड़क के किनारे वृक्षों से पत्ते गिर रहे हैं।
घ) हमें प्रतिदिन गरुजनों को प्रणाम करना चाहिए।

अथवा

iii. क) पिता के साथ पुत्र घर को जाता है।
ख) नचिकेता के पिता ने ब्राह्मणों को बूढ़ी गाएँ दान में दीं।
ग) श्रेष्ठ जनों का प्रतिदिन अभिवान करना चाहिए।
घ) गाँव के चारों ओर आम के पेड़ हैं।

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत
Subject : Sanskrit
कोर्स शीर्शक : संस्कृत साहित्य की रूपरेखा
05
Course Title :

विशय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject Code : UGST
कोर्स कोडः यू0जी0एस0टी0
Course Code : UGST-05

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।

Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A

खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 महाभारत तथा रामायण में वर्णित सांस्कृतिक महत्त्व का विस्तृत वर्णन कीजिए। 6

अथवा

महाभारत के रचनाकाल पर प्रकाष डालिए।

अथवा

रामायण के महत्व पर प्रकाष डालिए।

प्रश्न–2 कालिदास की 'ेली का वर्णन करते हुए उनकी रचनाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए। 6

अथवा

उपमा कालिदासस्य की समीक्षा कीजिए।

अथवा

महाकवि कालिदास के काल का निर्धारण कीजिए।

प्रश्न–3 श्री हर्ष की काव्यगत विशेषताओं की विस्तापूर्वक विवेचना कीजिए। 6

अथवा

श्रीहर्ष के काल एवं जीवन वृत्त पर प्रकाष डालिए।

अथवा

'माघे सन्ति त्रयोगुणा : इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 चम्पूकाव्य के स्वरूप को समझाते हुए नलचम्पू काव्य की विशेषता बताइए। 2

अथवा

पंचतंत्र की विषय–वस्तु तथा रचयिता का परिचय दीजिए।

अथवा

कथा साहित्य के उद्भव–विकास पर संक्षिप्त प्रकाष डालिए।

प्रश्न–5 महाकवि भास की कृतियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 2

अथवा

महाकवि अष्वघोष की कृतियों का परिचय दीजिए।

अथवा

महाकवि त्रिविक्रमभट्ट के चम्पूकाव्य के क्षेत्र में किए गये योगदान पर प्रकाष डालिए।

प्रश्न–6 हितोपदेश की विषय–वस्तु तथा रचयिता का परिचय दीजिए। 2

अथवा

'बाणेच्छिष्टं जगत् सर्वम्' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'दण्डिनः पदलालित्यम्' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न–7 'काव्येषु नाटक रम्यम' इस उक्ति की सार्थकता सिद्ध कीजिए। 2

अथवा

कथा तथा आख्यायिका में भेद स्पष्ट कीजिए।

अथवा

प्रश्न–8 'भारवेरर्थगौरवम् ' इस उक्ति की व्याख्या कीजिए। 2

अथवा

'नारिकेलफलसम्मित वचो भारवेः' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

भारवि की काव्यगत विषषताओं पर प्रकाष डालिए।

प्रश्न–9 'षिषुपालवध' की कथा–वस्तु पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए। 2

अथवा

वेणीसंहार के रचयिता का परिचय दीजिए।

अथवा

मृच्छकटिक नाटक है या प्रकरण– सिद्ध कीजिए।

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत विशय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject : Sanskrit **Subject Code : UGST**
कोर्स शीर्शक : संस्कृत निबन्ध(रचनानुवाद कौमुदी) कोर्स कोड :
यू0जी0एस0टी0 06
लघु सिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा, संधि, स्त्री प्रत्यय) **Course Code : UGST-06**
Course Title :

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A

खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्नलिखित में से किसी दो सूत्र की व्याख्या कीजिए – 6

i) हलन्त्यम् ii) आद्गुणः, iii) लोपःशाकल्यस्य

अथवा

i) एड्. पदान्तादति ii) अनेकाल् शित्सर्वस्य iii) झलांजाष्झषि

अथवा

i) स्तोः 'चुनाष्चुः ii) उरण् रपरः iii) इको यणचि

प्रश्न–2 निम्नलिखित का सूत्रोल्लेखपूर्वक सन्धि बताइये – 6

i) सुद्ध्युपास्यः ii) वागीषः iii) हरिष्षेते

अथवा

i) गड्.गौध ii) उपेन्द्र iii) नायक :

अथवा

i) दैत्यारिः ii) विष्णूदयः iii) उपैति

प्रश्न–3 निम्नलिखित शीर्षक में से किसी एक पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए – 6

i) संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्
ii) विद्ययाऽमृतमश्नुते

अथवा

i) कष्चित् संस्कृतकविः
ii) परोपकाराय सतां विभूतयः

अथवा

i) वेदानां महत्त्वम्
ii) अहिंसा परमो धर्मः

Section – B

खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 निम्नलिखित में से किसी दो का सूत्रोल्लेख करते हुए विग्रह कीजिए – 2

कृष्णैकत्वम्, उपैति

अथवा

होतृकारः, उपोषति

अथवा

कष्णर्द्धि, उपैति

प्रश्न–5 संहिता किसे कहते है?

अथवा

प्रत्याहार क्या हैं?

अथवा

संयोग किसे कहते है? 2

प्रश्न–6 'सुप्तिङन्तं पदम्' सूत्र को स्पष्ट कीजिए। 2

अथवा

आद्यन्तौ टकितौ

अथवा

मोऽनुस्वारः

प्रश्न–7 निम्नलिखित में से किसी दो की सिद्धि –प्रक्रिया लिखिये – 2

i) अष्वपालिका

ii) मातुलानी

अथवा

i) सर्विका

ii) चन्द्रमुखी

अथवा

i) करूः

ii) दाक्षी

प्रश्न–8 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र की व्याख्या कीजिए। 2

अथवा

पुयोगादाख्यायाम्

अथवा

सित्रयाम सूत्र की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न–9 निम्न में से किसी दो की सूत्रोल्लेखपूर्वक सिद्धि कीजिए – 2

i) युवतिः ii) अजा iii) 'ूर्पणखा

अथवा

i) कुमारो ii) भवति iii) गार्ग्यायणी

अथवा

i) त्रिफला ii) मृद्वी iii) अरण्यानि

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) | 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत | विशय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGST**
कोर्स शीर्शक : दर्शन I) ईशावास्योपनिशद | कोर्स कोड : यू0जी0एस0टी0
07

श्रीमद्भगवद् गीता (तत्त्वविवेचना सहित द्वितीय तथा तृतीय अध्याय | **Course Code : UGST-07**

Course Title :

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्नांकित किन्हीं दो मंत्रों की व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित हिन्दी व्याख्या कीजिए– 6

i. क) ईशावास्यमिंद सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

ख) अन्धं तमः प्रविषन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य 3 विद्यायाँ रताः ।।

अथवा

ii. क) विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्याया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

ख) हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।।

अथवा

iii. क) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा।
एवं त्वयि नान्यथेतोडस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

ख) सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाज्यौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।।

प्रश्न–2 निम्नांकित किन्हीं श्लोकों की सन्दर्भ व्याख्या कीजिए – 6

i. क) योगस्थः कुरु कर्माणि संड.गत्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

ख) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युधवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येदर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

अथवा

ii. क) सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौजयाजयो।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

ख) कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफल प्रदाम्।
क्रियाविषषबहुलां भौगेष्वर्यगतिं प्रति ।।

अथवा

iii. क) दु:खेष्वनुद्विग्नमना : सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोध : स्थितधीर्मुनिरूच्यते।।

ख) विहाय कामान् यः सर्वान् पुमाँष्चरति निःस्पृहः
निर्ममो निरहड्.कार : स 'ान्तिमधिग च्छति ।।

प्रश्न–3 निम्नांकित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। 6

i. गीता के आधार पर 'आत्मा' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ii. ईशावास्योपनिषद् के आधार पर 'आत्मतत्त्व' पर प्रकाष डालिए।

अथवा

iii. गीता के आधार पर कर्म–योग के सिद्धान्त का समझाइए।

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 **i.** सभी उपनिषदों का नाम लिखें तथा उनका संक्षिप्त परिचय दें। 2

अथवा

ii. गीता की द्वितीय अध्याय के आधार पर 'नैनं छिन्दन्ति 'ास्त्राणि, नैनं दहति पावकः न चैनं क्लेदयन्त्यापो न 'ोषयति मारूतः'।। का आषय स्पष्ट कीजिए। 2

अथवा

iii. 'त्यक्तेन भुञ्जीथा' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

प्रश्न–5 **i.** गीता के द्वितीय अध्याय का कोई एक 'लोक अर्थसहित लिखिए। 2

अथवा

ii. गीता के अधार पर 'नीरक्षीर विवेक' को स्पष्ट कीजिए। 2

अथवा

iii. ईशावास्योपनिषद् के अनुसार ईष्वर की सर्वव्यापकता का निरूपण कीजिए। 2

प्रश्न–6 **i.** निष्काम कर्म योग को परिभाषित कीजिए। 2

अथवा

ii. श्रीमद्भगवद्गीता के महत्त्व पर प्रकाष डालिए। 2

अथवा

iii. गीता के आधार पर भक्ति–योग के समझाइए । 2

प्रश्न–7 **i.** अषोच्यानन्वषौचस्त्वं प्रज्ञावादंष्च भाषसे गतासूनगतासूंष्च नाऽनुषोचन्ति पण्डिता : का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 2

अथवा

ii. गीता के अधार पर 'स्थित–प्रज्ञ' का लक्षण स्पष्ट कीजिए। 2

अथवा

iii. सीता के आधार पर 'समत्वं योग उच्यते' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 2

प्रश्न–8 **i.** गीता के आधार पर आत्मा की अमरता की सिद्ध कीजिए। 2

अथवा

ii. गीता के द्वितीय अध्याय का प्रतिपाद्य लिखिए। 2

अथवा

iii. गीता के तृतीय अध्याय का सारांष लिखिए। 2

प्रश्न–9 **i.** ईषावास्योपनिषद् का परिचय दीजिए। 2

अथवा

ii. उपनिषदों की प्रतिपादन 'ौली पर संक्षिप्त प्रकाष डालें। 2

अथवा

iii. ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। 2
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावषिष्यते ।। की व्याख्या कीजिए।

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत
Subject : Sanskrit
कोर्स शीर्शक : काव्य एवं काव्यशास्त्र
Course Title :

विशय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject Code : UGST
कोर्स कोड :यू0जी0एस0टी0 08
Course Code : UGST-08

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 **i.** आचार्य विष्वनाथ द्वारा उपस्थापित मम्मर के काव्य लक्षण में 'सगुणौ' पर की समीक्षा कीजिए।

अथवा

ii. आचार्य विश्वनाथ द्वारा उपस्थापित मम्मट के काव्य लक्षण में आए 'अदोषौ' पद की समीक्षा कीजिए। 6

अथवा

iii. मम्मट के काव्य लक्षण की विष्वनाथ की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

प्रश्न–2 **i.** आचार्य विश्वनाथ के काव्य–प्रयोजन की समीक्षा कीजिए। 6

अथवा

ii. आचार्य विष्वनाथ के अनुसार लक्षणा 'ाक्ति का विवेचना कीजिए। 6

अथवा

iii. साहित्यदर्पणकार के अनुसार आर्थीव्यंजना पर प्रकाष डालिए। 6

प्रश्न–3 **i.** विष्वनाथ के काव्य– लक्षण का विवेचना कीजिए। 6

अथवा

ii. साहित्य दर्पण के आधार पर रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 6

अथवा

iii. संकेतो गृहयते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च ' की व्याख्या कीजिए। 6

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 **i.** निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे
जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं
प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः ।।

अथवा

ii. निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवा।
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया।
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।।

अथवा

iii. विहाय 'ान्ति नृप धाम तत्पुनः
प्रसि0 सन्धेहि वधाय विद्विषाम्
व्रजन्ति 'ात्रूनवधूय निःस्पृहा
रामेन सिद्धिधं मुनयो न भूभृतः

प्रश्न–5 **i.** किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के आधार पर युधिष्ठिर का चरित्र–चित्रण कीजिए। 2

अथवा

ii. महाभारत की कथा से किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु कहाँ–कहाँ परिवर्तित हुई है, विवेचन कीजिए। 2

अथवा

iii. ''भारवेरर्थगौरवम्'' की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न–6 **i.** 'उत्कर्षहेतवः प्रोक्ताः गुणालड.काररीतयः' की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। 2

अथवा

ii. दोषास्तास्यापकर्षका : की व्याख्या कीजिए।

अथवा

iii. ''वाक्यं स्याद्योग्यताकाड्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः '' की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न–7 **i.** 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'– इस सूक्ति की समीक्षा कीजिए। 2

अथवा

ii. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभि'' सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

अथवा

iii. 'अहो ! दुरन्ता वलवद्विराधिता'', सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न–8 **i.** किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग का सारांश अपने 'ाब्दों में लिखिए। 2

अथवा

ii. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कौन सा छन्द प्रयुक्त हुआ है? क्षण एवं उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

iii. भारवि की काव्य 'ाली पर एक लेख लिखिये।

प्रश्न–9 **i.** किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के आधार पर गुप्तचर के गुणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।2

अथवा

ii. वनेचर ने युधिष्ठिर से कुरूप्रदेष से लौटने के बाद क्या –क्या बताया, विस्तारपूर्वक प्रकाष डालिये।

अथवा

iii. दुर्योधन के प्रति युधिष्ठिर के अन्दर क्रोध उत्पन्न करने के लिये द्रौपदी ने क्या–क्या कहा, सविस्तार प्रतिप्रादित कीजिए।

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास | 2017-2018

(Assignment)

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत
टी

विशय कोड : यू.जी.एस.

Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGST**

कोर्स शीर्शक : भाशा विज्ञान

कोर्स कोड :यू0जी0एस0टी0 09

Course Title :

Course Code : UGST-09

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 भाषा की उत्पत्ति के अनुकरण सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए। 6

अथवा

भाषा की उत्पत्ति के सन्दर्भ में दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

अथवा

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्रश्न–2 ध्वनि परिवर्तन के कारणों का विवेचन कीजिए। 6

अथवा

ध्वनि परिवर्तन की दिषाओं पर प्रकाष डालिये।

अथवा

संस्कृत बोल चाल की भाषा थी इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न–3 पालि भाषा की सामान्य विशेषताओं का परिचय दीजिए। 6

अथवा

प्राकृत भाषाओं की सामान्य विषषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

आय भाषा पर प्रकाष डालिए तथा इसका महत्व बताइए।

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 भारोपीय परिवार के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 2

अथवा

ध्वनियों के गुणों पर प्रकाष डालिए।

अथवा

अर्थ परिवर्तन की दिषाओं में अर्थ विस्तार का सादाहरण विवेचन कीजिए।

प्रश्न–5 लौकिक संस्कृत एवं वैदिक संस्कृत में अन्तर बताइये। 2

अथवा

स्वर के वर्गीकरण के कौन–कौन से आधार हैं? स्पष्ट कीजिए

अथवा

व्यज्जन की परिभाषा बताते हुए स्वर एवं व्यंज्जन में भेद प्रतिपादित कीजिए।

प्रश्न–6 द्रविड़ भाषा परिवार की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2

अथवा

वैदिक संस्कृत की प्रमुख विषेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

वैदिक संस्कृत की प्रमुख विषेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न–7 व्यंजनों के वर्गीकरण पर एक लेख लिखिये। 2

अथवा

भारतीय आर्यभाषाओं में संस्कृत के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

अथवा

आर्य परिवार के महत्व पर प्रकाष डालिए।

प्रश्न–8 भाषाओं के आकृतिमूलक वर्गीकरण के आधार पर प्रकाश डालिए। 2

अथवा

पालि 'ाब्द की व्युत्पत्ति स्पष्ट कीजिए।

अथवा

वैदिक संस्कृत एव अवेस्ता की तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

प्रश्न–9 निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए – 2

i) ग्रिम नियम

अथवा

ii) वैदिक संस्कृत

अथवा

भारोपीय परिवार आर्य भाषा का नाम भारत ईरानी 'ाख्य क्यों पड़ा?

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) | 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत | **विशय कोड : यू.जी.एस0एस0टी**

Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGSST**

कोर्स शीर्शक : ज्योतिर्गणित एवं ज्योतिर्विज्ञान का इतिहास | **कोर्स कोड :यू0जी0एस0एस0टी0 01**

Course Title : | **Course Code : UGSST-01**

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

(1) दषा और उत्तर दषा में क्या भेद है। इसे निकालने की रीति समझाइये। 6

(2) दषा के आधार पर फलादेष पर विचार किस प्रकार किया जाता है। अष्टोत्तरी और विषोत्तरी में क्या अन्तर है। 6

अथवा

गोचर से क्या तात्पर्य है? गोचर से ग्रहों के परिभ्रमण का ज्ञान कैसे किया जाता है। 6

अथवा

गोचर में 'ानि एक राषि पर कितने वर्ष रहता है। 'ानि की साढ़े साती कब होती है ? 6

3. पंचांग के पांच अंगो का सम्यक विवेचन कीजिए। पंचागों की क्या उपयोगिता है?

अथवा

प्रत्येक नक्षम में कितने चरण होते हैं चरणों के आधार पर राषियों का विवेचन कीजिए।

अथवा

'समाज में आज भी पंचांगों की उपयोगिता एवं विष्वसनीयता है। आलेख लिखें।

अथवा

सिद्धान्त ज्योतिष से क्या तात्पर्य है। इसकी उपयोगिता पर प्रकाष डालिए।
सिद्धान्त ज्योतिष के प्रमुख आचार्यो का उल्लेख कीजिए।

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12
MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(4) पितामह सिद्धान्त क्या है? 2

अथवा

सिद्धान्तों का किन अन्य सिद्धान्तों से सम्बन्ध है।

अथवा

सूर्य सिद्धान्त क्या है।

अथवा

वषिष्ट सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।

अथवा

किन्ही दो पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

(क) नक्षत्र

(ख) राषियाँ

(ग) ‘ानि की च्यौ

अथवा

प्रत्येक ग्रह के दषा वर्ष बताइये ।

अथवा

तागिक योग क्या है।

अथवा

'पंचाग' पर टिप्पणी लिखे।

अथवा

'गोचर' क्या है।

(4) द्वादष राषियों का नाम बताइए।

अथवा

सूर्य की दषा कितने वर्ष की होती है।

अथवा

राषियों के स्वामी का क्रमष : नाम बताइये।

अथवा

मूल नक्षत्र कौन से हैं।

अथवा

'षुभ योग' में काम क्यों करना चाहिए।

अथवा

किन्हीं दो ‘ुभ योगी का नाम बताइये

अथवा

अपनी ' राषि' बताइये ? आपके लिए कितनी अच्छी है?

अथवा

'ज्योतिष' का जीवन में क्या महत्व है।

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत | विशय कोड : यू.जी.एस.एस.टी
Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGSST**
कोर्स शीर्शक : फलित ज्योतिश
कोर्स कोड : यू.जी.एस.एस.टी. **02**
Course Title : | **Course Code : UGSST-02**

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 ‘ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

(1) फलित ज्योतिष का क्या महत्व है। फलादेष के नियमों का उल्लेख कीजिए। 6

अथवा

‘गणित’ सही तरीके से नहीं की गयी तो फलादेष गलत होगा । आलेख लिखें।

अथवा

आधान कुण्डली और जन्म कुण्डली में क्या अन्तर है। विस्तार से लिखें।

(2) जन्माग का क्या महत्व है वैज्ञानिक दृष्टि से विष्लेषण कीजिए। 6

अथवा

कुण्डली में कितने भाव होते हैं। प्रत्येक भाव की विस्तार से चर्चा कीजिए।

अथवा

काल गणना में वर्ष, पक्ष, वि...

(3) चन्द्रमा के बलाबल पर विस्तार से चर्चा करें। 6

अथवा

‘अमृत सिद्ध योग’ ‘ुभ कार्यों के लिये कितना उपयोगी है। फलित ज्योतिष में क्या उपयोगिता है।

अथवा

गजच्छाया योग’ क्या है। इसके ‘ुभा–षुभ फल का निरूपण कीजिए।

(खण्ड–ब)

(4) राषियों की दिषायें क्या हैं? 2

अथवा

राषियों के आधार पर स्वभाव निर्धारित करें।

(5) ग्रह कितने होते हैं। 2

अथवा

ग्रहों के स्वभाव का निर्धारण करें।

अथवा

ग्रहों की जाति गुण धर्म का विवेचना करें।

(6) किन–किन राषियों के ग्रह उच्च तथा नीचे के होते हैं? 2

अथवा

मानव 'ारीर पर ग्रहों का क्या प्रभाव पड़ता है।

अथवा

गुरू और 'ाुक्र के उदय –अस्ति पर विचार व्यक्त करें।

(7) मंगल किन –किन भावों में श्रेष्ट है।

अथवा

भावों का कारकत्व विवेचित करें।

अथवा

रोग से बचने के उपाय बतायें

(8) ग्रहों के आधार पर रोग का कारण क्या है। 2

अथवा

नक्षत्रों के प्रभाव से रोगों पर विचार

अथवा

कुण्डली में रोग, आयु, मित्य,मात्य के भाव निर्धारित करें।

(9) नवग्रह यन्त्रों के बारे में क्या जानते हो। 2

अथवा

राहु , सूर्य तथा गुरू के आय का मंत्र क्या है।

अथवा

नवग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करने में रत्नों की क्या भूमिका है।

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत | विशय कोड : यू.जी.एस0एस0टी
Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGST**
कोर्स शीर्शक : वास्तुशास्त्र
कोर्स कोड : यू0जी0एस0एस0टी0 03
Course Title : | **Course Code : UGSST-03**

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

(1) वास्तुषास्त्र का ज्ञान क्यों आवष्यक है, इसका उद्गम क्यों और कैसे हुआ?
अथवा
वास्तु आर पंचतत्व का क्या सम्बन्ध है। सूर्य का क्यों महत्व है?
अथवा
भूमि के विभिन्न प्रकारों की विस्तार से चर्चा कीजिए।
अथवा
(2) वास्तुषास्त्र में भूमि परीक्षण की क्यों आवष्यकता है। प्रकाष डालिए।
अथवा
आवसीय भवन में नींव की खुदाई और निर्माण के किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।
अथवा
आवासीय भवन में ऑगन तथा कक्ष निर्माण की आवष्यकता पर विचार व्यक्त कीजिए।

(3) वास्तुषास्त्र के अन्तर्गत भवन में ध्वजा आदि स्थापना का विधान क्यों है?
अथवा
गृह प्रवेष 'ाुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए क्यों?
अथवा
घर में वृक्ष रोपित करने तथा वाटिका निर्माण की विद्या का निरूपण कीजिए।

(खण्ड–ब)

(4) राजभवन के लक्षण क्या हैं?
अथवा
देवी–देवताओं की मूर्तियों की माप एवं दिषा निर्धारण पर अपने विचार रखें।
अथवा
वास्तु दोष निवारण पर प्रकाष डालें।

(5) रंगों का 'ाास्त्रीय महत्व क्या है?

अथवा

घर में वास्तु दोष कब होता है। मुख्य द्वार किस दिषा में होना चाहिए।

अथवा

जन्म कुण्डली से वास्तु विचार कैसे करेंगे।

(6) व्यावसायिक प्रतिष्ठान के निर्माण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

अथवा

भवन में स्वास्तिकापि धार्मिक प्रतीकों की स्थापना का क्या महत्व है।

अथवा

वास्तु पूजा का क्या विधान है।

(7) निम्न पर चार टिप्पणी लिखें।

भवन में वेध विचार का महत्व

अथवा

देववास

अथवा

प्राण प्रतिष्ठा

(8) सचल एवं अचल देवप्राण प्रतिष्ठा क्या है?

अथवा

भवन के देवालय किस दिषा में होना चाहिए।

अथवा

देव पंचायतन क्या है?

(9) आवासीय भवन में जल का स्रोत किधर होना चाहिए।

अथवा

'रसोई घर' का वास्तु 'ाास्त्रीय विवेचन करे।

अथवा

'षयन कक्ष' पर विचार आवष्यक है। क्यों?

उत्तर प्रदेश राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) | 2017-2018

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विशय – संस्कृत | विशय कोड : यू.जी.एस0एस0टी
Subject : Sanskrit | **Subject Code : UGSST**
कोर्स शीर्शक : मुहूर्तशास्त्र एवं आयुर्वेद ज्योतिश | **कोर्स कोड :** यू0जी0एस0एस0टी0 04
Course Title : | **Course Code : UGSST-04**

अधिकतम अंक : 30
MaximumMarks:30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न । प्रश्नों के अपने उत्तर 800 से 1000 'ाब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A
खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

(खण्ड–अ)

(1) मुहूर्त क्या है, इसके कितने प्रकार होते है?

अथवा

मुहूर्त में 'ाकुन विचार का क्या महत्व है? मुहूर्त एवं पंचांगों से सम्बन्ध निरूपित कीजिए।

अथवा

यात्रा में 'ाुभा–षुभ लग्न पर विचार कीजिए। ग्रहों के महत्व को भी निरूपित करें।

(2) संस्कार और मुहूर्त का क्या सम्बन्ध है?

अथवा

सोलह संस्कारों पर विस्तार से प्रकाष डालिए।

अथवा

वधू प्रवेष द्विरागमन मुहूर्त पर चर्चा करें।

(3) 'राहुकाल' क्या है । इस काल में 'ाुभ कार्य क्यों वर्णित हैं?

अथवा

'पंचक दोष' की हिन्दू समाज में आज भी मान्यता है। पंचक में मृत्यु होने पर क्या दोष 'ाान्ति करनी चाहिए।

अथवा

'मुद्रा' से क्या तात्पर्य है। यह –किन किन कार्यों में वर्जित है।

(खण्ड–ब)

(4) विवाह में 'गुरू अस्त' पर विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

अंधलोचन तथा मंद नक्षत्रों पर प्रकाष डालिए।

अथवा

'गर्भाधान' में 'ौच, अषौंच पर विचार कब और क्यों किया जाता है।

(5) अधिकास एवं क्षय मास क्या है?

अथवा

संक्रान्ति क्या है। सूर्य संक्रान्ति पर विचार व्यक्त करें।

अथवा

विवाह कितने प्रकार के होते हैं ।

(6) 'भार्या' कैसी होनी चाहिए । लक्षणों पर प्रकाष डालिए।

अथवा

विवाह भंग योग की चर्चा करें।

अथवा

रोगों का ज्योतिष से क्या सम्बन्ध है।

(7) रोगों के प्रकार पर प्रकाष डालें।

अथवा

'नक्षत्र वाटिका' क्या

अथवा

रोग और वृक्षों की उपयोगिता पर प्रकाष डालें।

(8) वनस्पति एवं ग्रहों का सम्बन्ध क्या है?

अथवा

वनस्पति एवं नक्षत्रों का सम्बन्ध निरूपित कीजिए।

अथवा

विविध रोगों में नवस्पति की क्या उपयोगिता है?

(9) निम्न में से एक पर टिप्पणी लिखें।

(क) वातज रोग

(ख) पित्तज रोग

(ग) कधज रोग

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अधिन्यास (Assignment) 2018-2019

स्नातक कला कार्यक्रम (बी0ए0)
Bachelor of Art Programme (B.A.)

विषय – संस्कृत
Subject : Sanskrit

विषय कोड : यू.जी.एस.टी
Subject Code : UGST

कोर्स शीर्षक : बाणभट्टकृत कादम्बरी कथामुखम्

कोर्स कोड : यू0जी0एस0टी0
03

Course Title : (अगस्त्याश्रमवर्णन पर्यन्त)
सिद्धान्त कौमुदी (कारक प्रकरण)
लघु सिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा, संधि, स्त्री प्रत्यय)
संस्कृत निबन्ध

Course Code : UGST-03

अधिकतम अंक : 30
Maximum Marks:

30

नोट : दीर्घ उत्तरीय प्र''न । प्र''नों के अपने उत्तर 800 से 1000 भाब्दों में लिखें। सभी प्र''न अनिवार्य है।
Note: Long Answer Questions. Answer should be given in 800 to 1000 words. Answer all questions. All questions are compulsory.

Section – A

खण्ड - अ

अधिकतम अंक : 18

MaximumMarks:18

प्रश्न–1 निम्नलिखित गद्यांश का अनुवाद कीजिए– 6

i. आसीद''ाषनरपतिि''ारः समभ्यर्चित''ाासनः पाक''ाासन इवापरः, चतुरुदधिमाला मेखलाया भुवो भर्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तिलक्षमणोपेतः, चक्रधर इव करकमलोपलक्ष्यमाण''ाङ्.खचक्रलाच्छनः, हर इव जितमन्मथः गुह्य इवाप्रतिहत''ाक्तिः, कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः, जलधिरिव लक्ष्मीप्रसूतिः गंगाप्रवाह इव भगीरथपथप्रवृत्तदानाद्रीकृतकरः, कर्ता महा''चर्याणाम्, अर्हता क्रतूनाम् आद''िः सर्व''ाास्त्राणाम् उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनम् गुणानाम् आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदय''ैलो मित्रमण्डस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्, प्रत्यादे''ाो धनुष्मताम्, धौरेयः साहसिकानाम् अग्रणीर्विदग्धानाम् वैनतेय इव विनतानन्दजननः वैन्य इव चापकोटिसमुत्सारितारातिकुलाचलो राजा शूद्रको नाम।

प्रश्न–2 बाण के साहित्यिक वैभव का वर्णन कीजिए। 6

प्रश्न–3 चाण्डाल कन्या का चरित्र–चित्रण कीजिए।

Section – B
खण्ड - ब

अधिकतम अंक : 12 MaximumMarks:12

नोट : लघु उत्तरीय प्रश्न/प्रश्नों के उत्तर 200 से 300 शब्दों में लिखें। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न–4 अधोलिखित संज्ञाओं का विधान करने वाले सूत्र का उल्लेख कीजिए। 2

i. क) संहिता

ख) अनुनासिक

प्रश्न–5 अधोलिखित तीन सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 2

क) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

ख) अकथितं च

ग) येनांगविकारः

प्रश्न–6 निम्नलिखित रेखांकित पदों में से दो का सूत्रोल्लेखपूर्वक विभक्ति का निर्देश कीजिए : 2

क) <u>तण्डुलान्</u> ओदनं पचति।

ख) <u>क्रोशं</u> कुटिला नदी।

प्रश्न–7 निम्नलिखित में से किसी दो सूत्र की व्याख्या कीजिए – 2

i) हलन्त्यम् ii) आद्गुणः, iii) लोपःशाकल्यस्य

प्रश्न–8 निम्नलिखित का सूत्रोल्लेखपूर्वक सन्धि बताइये – 2

i) सुद्ध्युपास्यः ii) वागी"ाः iii) हरि""ाते

प्रश्न–9 निम्नलिखित शीर्षक में से किसी एक पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए – 2

i) संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

ii) विद्ययाऽमृतमश्नुते